पीयूषम्

(प्रथम भाग)

कक्षा – IX

© BSTBPC

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), मानव संसाधन विकास विभाग,
बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा शोध एवं और प्रशिक्षण परिषद्, बिहार,
पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

प्रथम संस्करण : 2009

मूल्य : रु० 20.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित तथा : जे० एम० डी० प्रेस, मुसल्लहापुर पटना - 6 अद्वारा 2,00,00,0 प्रतियाँ मुद्रित ।

प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल, 2009 से राज्य के कक्षा-IX हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया है। प्रथम चरण में शैक्षिक सत्र 2009 के लिए वर्ग-IX की सभी भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकों को पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एस. सी. ई. आर. टी., बिहार, पटना द्वारा सभी भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकें (वाणिज्य एवं कला विषयक) बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित किया जा रहा है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, श्री नीतीश कुमार, मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री हरिनारायण सिंह तथा मानव संसाधन विकास विभाग के प्रधान सचिव, श्री अंजनी कुमार सिंह के मार्ग निर्देशन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एस. सी. ई. आर. टी., बिहार, पटना के निदेशक के हम आभारी हैं, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन, निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

हसनैन आलम, भा.प्र.से.
प्रबन्ध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

संरक्षण :

- **श्री हसन वारिस,** निदेशक (प्रभारी), राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना
- **श्री रघुवंश कुमार,** निदेशक, (शैक्षणिक) बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग) पटना
- **डॉ0 सैयद अब्दुल मोईन,** विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार
- **डॉ0 कासिम खुर्शीद,** विभागाध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

संस्कृत पाठ्यपुस्तक विकास समिति

अध्यक्ष – **प्रो० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',** पूर्व आचार्य तथा अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

© BSTBPC

समन्वयक - **डॉ0 सुरेन्द्र कुमार,** व्याख्याता (वि० शि० से०) राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना-800 006

सदस्य –

1. डॉ० मधु बाला सिन्हा, धर्मसमाज संस्कृत महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर
2. डॉ० वैद्यनाथ मिश्र, संस्कृत विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (सारण)
3. डॉ० दिवांशु कुमार, संस्कृत विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (सारण)
4. डॉ० रामनारायण सिंह, श्री रघुनाथ प्रसाद बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, कंकड़बाग, पटना-20
5. डॉ० विमल ठाकुर, कर्पूरी ठाकुर राजकीय उच्च विद्यालय, लहेरियासराय, दरभंगा
6. डॉ० मधुसूदन मणि त्रिपाठी, विपिन उच्च माध्यमिक विद्यालय, बेतिया (पश्चिमी चम्पारण)
7. डॉ० विजय कुमार पाण्डेय, जिला स्कूल, छपरा (सारण)

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक) पटना द्वारा आयोजित समीक्षा संगोष्ठी के सदस्य –

प्रो० ब्रह्मचारी सुरेन्द्र कुमार — पूर्व कुलपति, कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा

प्रो० अशोक कुमार — स्नात्तकोत्तर संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना

अकादमिक सहयोग –

डॉ० ज्ञान्ति कुमारी — शिक्षा संकाय, राँची विश्वविद्यालय, राँची

श्री इम्तियाज आलम — व्याख्याता, शिक्षा, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

श्रीमती बेबी कुमारी — सहायक शिक्षिका, राजकीय बालिका उच्च विद्यालय, महुआबाग, पटना

श्री देवेन्द्र प्रसाद — प्रधानाध्यापक, उच्च विद्यालय परसा, सारण

पुरोवाक्

संस्कृतं भारतवर्षस्य अतीव महत्त्वपूर्णा भाषा। अस्या अध्ययनं विद्यालयेषु परम्परया क्रियते विविधैर्विषयैः सह। छात्राणां सामञ्जस्यं च संस्कृतादिभिः विषयैः समं विद्यालयशिक्षाकाले संस्थापितमभूत्। क्रमेण 2005 तमे ईस्वीवर्षे राष्ट्रिय-पाठ्यचर्या-रूपरेखा प्रकाशिता जाता यत्र छात्राणां विद्यालयजीवनस्य संयोजनं विद्यालयेतरजीवनेन भवेदितित्यनुशंसितम्। इतः पूर्वं शिक्षाव्यवस्थायां पुस्तकीयं ज्ञानमेव रेखाङ्कितमासीत्, यत्र विद्यालयस्य परिवारस्य समुदायस्य च मध्येऽन्तरालं पोषितम्। राष्ट्रियपाठ्यचर्यावलम्बितानि पाठ्यपुस्तकानि तु मूलभावस्य व्यवहारदिशायां प्रयत्नरूपाणि वर्तन्ते। संस्कृतविषयस्यानुशीलने बिहारराज्येऽपि तथाभूतानि पाठ्यपुस्तकानि भवेयुरिति संकल्पोऽस्माकम्। आशास्महे यदस्माकमभिनवः प्रयासः 1986 ईस्वीयायां राष्ट्रियशिक्षानीतौ अनुशंसितायाः बाल-केन्द्रित शिक्षाव्यवस्थायाः विकासाय कल्पिष्यते।

अस्य सफलता तु विद्यालयानां प्राचार्याणां शिक्षकाणां च तथाभूतान् प्रयासानालम्बते यत्र ते सर्वानपि छात्रान् स्वानुभवेन ज्ञानार्जनाय, कल्पनाशीलतायाः विकासाय, प्रश्नान् प्रष्टुं च प्रोत्साहयन्ति। अत्र स्वीकरणीयमेव तथ्यमेतद् यद् रुचिपूर्णा पाठसामग्री, तदनुशीलनाय स्वतन्त्रता च यदि छात्रेभ्यो दीयते तदा ते वयस्कैः प्रदत्तेन ज्ञानेन संयुज्य स्वयमेवं नूतनं ज्ञानं सृजन्ति। परीक्षायाः आधारोऽपि व्यापको भवेत्, न तु पाठ्यपुस्तकाश्रितं ज्ञानमात्रम्। बालकेषु सर्जनशक्तेः कार्यारम्भ-प्रवृत्तेश्च आधानं तदैव सम्भवेत् यदा वयं तान् सर्वानपि शिक्षणप्रक्रियायाः प्रतिभागित्वेन स्वीकुर्याम, न तु केवलस्य निर्धारितज्ञानस्य ग्राहकरूपेण।

एतान्युद्देश्यानि विद्यालयस्य दैनिककार्यक्रमे कार्यपद्धतौ च परिवर्तनमपेक्षन्ते। यथा दैनिकसमयसारण्यां परिवर्तनशीलता अपेक्षिता, तथैव वार्षिककार्यक्रमाणां निर्वहणे तत्परतापि अनिवार्या। तदैव शिक्षणार्थं नियते काले वास्तविकं शिक्षणं सम्भवति। नूनं राष्ट्रियशिक्षानीतेः बिहारराज्यस्य विशेषस्थितेश्च दृष्ट्या पाठ्यपुस्तकमिदं छात्राणां विद्यालयीय-जीवने आनन्दानुभूतये प्रभावकं भविष्यति, न तु नीरसतायाः साधनम्। पाठ्यचर्याभारस्य निदानाय पाठ्यक्रमनिर्मातृभिः बालमनोविज्ञानदृष्ट्या अध्यापनाय उपलब्ध-कालदृष्ट्या च विविधस्तरेषु विषयज्ञानस्य पुनर्निर्धारणेन प्रयत्नो विहितः। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते चिन्तनस्य, उत्सुकतावृद्धेः, लघुसमूहेषु वार्तायाः, कार्यानुभवादि-गतिविधीनां च प्रभूतमवसरं दास्यति।

अस्य अनुपूरक-रूपेण द्रुतवाचनाय छात्राणां मनोविनोदाय स्वतोऽनुशीलनाय च ललिता सामग्री प्रदत्ता। तत्र कविता-गीत-कथा-प्रहेलिकादिविषया: संकलिता:।

बिहारराज्यशैक्षिकानुसंधानप्रशिक्षणपरिषद् एतस्य निर्माणकार्ये संस्कृतपाठ्यपुस्तकविकाससमिते: अध्यक्षाय विश्रुतयशसे **डॉ0 उमाशंकरशर्मणे** तत्सहायकेभ्य: प्रतिभागिभ्यश्च भूयोभूय: साधुवादं वितरति, स्वकृतज्ञतां च ज्ञापयति। तदनु पाठ्य-पुस्तक-निर्माणक्रमे संयोजककर्मणि दत्तचित्ताय **डॉ0 सुरेन्द्र कुमार पालाय** च महानामाभारं प्रकाशयति ।

हसन वारिस:

निदेशक: (प्रभारी)

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार

भूमिका

संस्कृत भाषा की महत्ता सर्वविदित है। यह न केवल संसार की उपलब्ध तथा जीवित भाषाओं में प्राचीनतम है अपितु अपने चार हजार वर्षों के दीर्घ इतिहास में इसने अनेक घात-प्रतिघात सहते हुए भारत की अमूल्य संस्कृति और समाज को अपने में सँजो कर रखा है। इससे उत्तर, पूर्व तथा मध्यभारत में प्रचलित हिन्दी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, बंगला, उड़िया, असमिया, मैथिली आदि भाषाएँ साक्षात् निकली हैं। यही नहीं, इस भाषा की शब्द-सम्पदा से दक्षिण भारत की चारों प्रधान भाषाएँ (तमिल, तेलुगु, कन्नड़ तथा मलयालम) विपुल रूप में उपकृत हुई हैं। इस प्रकार अखिल भारतीय स्तर पर हमारे बहुभाषिक देश की यह सर्वोत्तम ज्ञान-सम्पदा है। इसका अध्ययन इसी दृष्टि से आज अपेक्षित है।

संस्कृत का व्याकरण इतना समृद्ध और व्यापक नियमों से अनुप्रमाणित है कि शब्द के प्रत्येक अक्षर की व्याख्या इससे की जा सकती है। विदेशी भाषाओं के विद्वानों ने इसपर आश्चर्य प्रकट किया है। इसके अतिरिक्त शब्द-निर्माण की अद्‌भुत क्षमता इस भाषा में है जिससे लाखों-लाख नये शब्द इसकी व्याकरण पद्धति से निकल सकते हैं। विज्ञान का कितना भी विकास हो, उसके उपकरणों के लिए पारिभाषिक शब्दावली देने में संस्कृत भाषा विश्व की सभी भाषाओं की अपेक्षा धनी है। 'योग' शब्द के पूर्व उपसर्गों के लगने पर प्रयोग, अनुयोग, वियोग, संयोग, अभियोग, आयोग, प्रतियोग, उपयोग, अतियोग आदि शब्दों के अतिरिक्त व्यायोग, प्रतिसंयोग, अभ्यायोग आदि दुहरे-तिहरे उपसर्गों के प्रयोग भी चल सकते हैं। दूसरी ओर प्रत्ययों की एक अपूर्व श्रृंखला शब्दों से लगकर शब्द-निर्माण की समृद्धि को प्रकाशित करने की दृश्यावली प्रस्तुत कर सकती है। समासों की बात तो इससे अलग ही है।

ऐसी समृद्ध भाषा को आज के भौतिक युग में अनेक संघर्ष तथा प्रतिघात झेलने पड़ रहे हैं। फिर भी इसका प्रसार अभिनव साहित्यिक तथा शास्त्रीय कृतियों के द्वारा हो रहा है। एक विद्वान का तो कथन है कि संस्कृत के विकास के लिए बीसवीं शताब्दी स्वर्णयुग रही है क्योंकि इतनी रचनाएँ संस्कृत में कभी नहीं हुईं जितनी इस एक शताब्दी में। इससे संस्कृत भाषा की जीवनी-शक्ति का अनुमान होता है। आज संस्कृत में वे सारी बातें आ रही हैं जो एक आधुनिक सम्पन्न भाषा में हैं।

संस्कृत की प्राचीनता के साथ आधुनिकता का परिदृश्य निर्विवाद है। ऐसी भाषा का अनुशीलन अपनी संस्कृति के प्रति तो हमें प्रबुद्ध बनाता ही है, आधुनिक विषयों को भी इस प्राचीन

भाषा के द्वारा आत्मसात् करने के लिए प्रवृत्त करता है। आज हमारे बहुभाषिक राष्ट्र में इस सर्वमान्य भाषा की आवश्यकता राष्ट्र की एकता के लिए है। अंगरेजी जैसी विदेशी भाषा की अपेक्षा यह अपने देश की प्राचीनतम सांस्कृतिक भाषा है। इसलिए इसके अनिवार्य अनुशीलन की प्रासंगिकता है। जिस प्रकार बहुभाषी कक्षा में अन्य भाषाओं को सीखने में संस्कृत सहायक होती है उसी प्रकार कक्षा में उपलब्ध बहुभाषिकता का संस्कृत सीखने में उपयोग किया जा सकता है। बिहार राज्य के संदर्भ में यह बहुभाषिकता केवल मैथिली, भोजपुरी तथा मगही एवं उनकी अंगरूप (अंगिका, बज्जिका आदि) भाषाओं तक सीमित है। ये सब संस्कृत से अपनी शब्द, सम्पत्ति, व्याकरण तथा वाक्य-रचना का व्यापक प्रभाव प्रस्तुत करती हैं।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्धारित विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 के आलोक में तथा बिहार की अपनी विद्यालयी आवश्यकता के आलोक में माध्यमिक स्तर (कक्षा 9 तथा 10) के लिए वैकल्पिक विषय के रूप में संस्कृत पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। इस पाठ्यचर्या में निम्नांकित पाँच लक्ष्य रखे गये हैं–

1. भारमुक्त शिक्षा का कार्यक्रम।
2. आनन्दप्रद अनुभूति के रूप में शिक्षा की प्रस्तुति।
3. जीवन के परिवेश से शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध होना।
4. शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार।
5. कण्ठाग्र करने की परम्परागत पद्धति से हटकर छात्रों को स्वतंत्र चिन्तन के लिए प्रेरित करना।

संस्कृत के नवीन पाठ्यक्रम में उपर्युक्त निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप नवम कक्षा के लिए पीयूषम् (प्रथम भाग) नामक पाठ्यक्रम की प्रस्तुति की गयी है। नवीन पाठ्यक्रम तथा वर्तमान पुस्तक की विशिष्टताओं में सर्वप्रथम यह उल्लेखनीय है कि इसमें संस्कृत को एक जीवन्त भाषा के रूप में देखा गया है जिसकी धारा निरन्तर प्रवाहित होती रही हैं। इसी दृष्टि से इसमें नये विषयों और नयी रचनाओं का समावेश किया गया है। नये विषयों में बिहार के सांस्कृतिक वैभव, आधुनिक ग्राम्यजीवन की समस्याओं तथा किशोरों के मनोविज्ञान पर पाठ रखे गये हैं । धार्मिक समरसता की दृष्टि से मुसलमानों के सबसे उल्लासमय पर्व ईद (ईद-उल-फितर) का निरूपण करते हुए स्वतन्त्र पाठ बनाया गया है। बिहार के स्वतन्त्रता-सेनानी बावू कुँवर सिंह की संक्षिप्त जीवनी भी दी गयी है। संस्कृत की

नयी रचनाओं में राष्ट्रबोध से सम्बद्ध एक लघुकथा और बिहार के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थल वैशाली पर एक संस्कृत गीत भी दिया गया है। इसी प्रकार संस्कृत के महत्त्व पर एक संवादात्मक पाठ भी समाविष्ट किया गया है। ये सभी पाठ संस्कृत की वर्तमान धारा से जुड़े हुए हैं।

आधुनिक संस्कृत पाठों का अर्थ यह नहीं है कि इस भाषा की समृद्ध प्राचीन रचनाओं की उपेक्षा की गयी है अपितु वर्ग के स्तर के अनुरूप महाभारत के वनपर्व के अन्त में आये हुए यक्ष और युधिष्ठिर के बीच का प्रश्नोत्तर, पञ्चतन्त्र की दो कथाएँ एवं नीतिशतक के कुछ चुने गये पद्य भी छात्र-हित में रखे गये हैं। इसी क्रम में प्राचीन संस्कृत साहित्य में पर्यावरण-विषयक चर्चा को भी रख सकते हैं। धार्मिक संकीर्णताओं से मुक्त उपनिषदों तथा भगवद्गीता के कुछ अंशों को परमेश्वर की प्रार्थना के रूप में आरम्भ में रखा गया है। ये सब संस्कृत की प्राचीन विरासत को रेखांकित करते हैं।

प्रत्येक पाठ के आरम्भ में सम्बद्ध पाठ के समुचित सन्दर्भ संस्कृत भाषा में दिये गये हैं। अल्प परिश्रम से उन्हें समझा जा सकता है। पाठों को स्वतः समझने के लिए उनके अन्त में शब्दार्थ तथा अपेक्षित व्याकरण-सन्दर्भ दिये गये हैं। पाठों को विविध आयामों में समझने के लिए यथेष्ट अभ्यासचारिका भी दी गयी है जिसमें कुछ मौखिक और कुछ लिखित अभ्यासकार्य का समावेश है। कुछ पाठों में योग्यता-विस्तार के अन्तर्गत अतिरिक्त सूचनाएँ दी गयीं हैं जिनसे कहीं-कहीं पाठों को उचित परिप्रेक्ष्य में समझा जा सकता है और कहीं-कहीं अधिक जानने की उत्सुकता भी हो सकती है।

पाठों का परिचय– यद्यपि सभी पाठों के सन्दर्भ उनके आरम्भ में दिये गये हैं तथापि यहाँ उनका संक्षिप्त परिचय दिया जाता है। यहाँ कुल पन्द्रह पाठ हैं जिनमें चार पद्यात्मक, तीन कथात्मक, एक संवादात्मक तथा सात निबन्धात्मक हैं। इनका परिचय इस प्रकार हैं–

(क) पद्यात्मक पाठ–

1. ईशस्तुतिः– इसमें तीन मन्त्र विभिन्न उपनिषदों से तथा दो पद्य भगवद्गीता से लिये गये हैं। ये उपनिषदें हैं– तैत्तिरीय, बृहदारण्यक तथा श्वेताश्वतर। तैत्तिरीय उपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद से सम्बद्ध है। इसमें तीन वल्लियाँ (खण्ड) हैं जिनके नाम हैं– शिक्षावल्ली, ब्रह्मानन्दवल्ली तथा भृगुवल्ली। ये वल्लियाँ भी अनुवाकों (उपखण्डों) में विभक्त हैं। शुक्ल यजुर्वेद से संबद्ध बृहदारण्यकोपनिषद् विशाल ग्रन्थ है जो छह अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय विभिन्न संख्या वाले ब्राह्मणों में विभक्त है। यह उपनिषद् विशेष रूप से मिथिला के योगिराज याज्ञवल्क्य के दार्शनिक विचारों के लिए प्रसिद्ध है। श्वेताश्वतरोपनिषद् भी कृष्ण यजुर्वेद से संबद्ध है। यह छह अध्यायों में विभक्त है। प्रत्येक अध्याय में पद्यात्मक मन्त्र हैं। ईशस्तुति में संकलित मन्त्र आनन्दरूप, परम शक्तिशाली, जगत् के कण-कण में

विराजमान परमेश्वर की वन्दना करते हुए प्रकाश की प्राप्ति के लिए प्रार्थना भी करते हैं।

2. यक्षयुधिष्ठिर-संवादः– यह पाठ महाभारत के वनपर्व के एक अध्याय से संकलित है। युधिष्ठिर वन में एक सरोवर के रक्षक एक अदृश्य यक्ष की दार्शनिक जिज्ञासाओं को अपने उत्तरों द्वारा शान्त करते हैं। कथा के अनुसार अन्य भाई बिना उत्तर दिये ही जल पीना चाहते थे जिससे यक्ष ने उन्हें अचेत कर दिया था। युधिष्ठिर ने उचित उत्तर देकर न केवल यक्ष को प्रसन्न किया, अपितु अपने भाइयों का चैतन्य भी वापस माँगा। वे पूर्ववत् जी उठे।

3. नीतिपद्यानि– इस पाठ में संस्कृत के प्रसिद्ध कवि भर्तृहरि के नीतिविषयक मुक्तक काव्य 'नीतिशतक' के कुछ सरल पद्य दिये गये हैं। भर्तृहरि एक राजा के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं जिन्होंने संसार से ऊबकर संन्यासी-रूप ग्रहण किया था। इनके तीन मुक्तक काव्य हैं– नीतिशतक, शृंगारशतक और वैराग्यशतक। इनकी भाषा-शैली सरल और ललित है। इनमें एक-एक पद्य स्वतन्त्र भाव प्रकट करता है।

4. विश्ववन्दिता वैशाली– यह आधुनिक गीत है जिसमें लिच्छवियों की प्रसिद्ध राजधानी वैशाली की महिमा गायी गयी है। वैशाली में ही संसार का पहला गणतन्त्र शासन स्थापित हुआ था। बाद में यह सभासदों के आपसी कलह से नष्ट हो गया। आधुनिक वैशाली जिले में लालगंज के निकट इस राजधानी के प्राचीन अवशेष देखे जा सकते हैं। इस गीत के लेखक डॉ० वैद्यनाथ मिश्र हैं।

(ख) कथात्मक पाठ

1. लोभाविष्टः चक्रधरः– यह 'पञ्चतन्त्र' नामक प्राचीन नीतिकथासंग्रह से लिया गया पाठ है। इस कथासंग्रह के लेखक विष्णुशर्मा कहे गये हैं। पञ्चतन्त्र में पाँच खण्ड हैं। उनके नाम हैं– मित्रभेद (22 कथाएँ), मित्रसम्प्राप्ति (6 कथाएँ), काकोलूकीय (16 कथाएँ), लब्धप्रणाश (11 कथाएँ) तथा अपरीक्षितकारक (14 कथाएँ)। मुख्य 6 कथाओं को जोड़कर कुल 75 कथाएँ पूरे संग्रह में हैं। कथाएँ गद्य में हैं जिनके बीच अनेक पद्य भी नीतिश्लोक के रूप में हैं। इस प्रकार प्रायः 1100 पद्य भी आये हैं। सामान्यतः पशु-पक्षियों को पात्र बनाकर ये नीतिकथाएँ प्रस्तुत हैं किन्तु पाँचवें तन्त्र (अपरीक्षित कारक) में मनुष्यों की ही कथाएँ हैं। प्रस्तुत पाठ इसी तन्त्र का संकलित अंश है जिसमें अधिक लोभ का दुष्परिणाम दिखाया गया है।

2. ज्ञानं भारः क्रियां विना– यह पाठ भी पञ्चतन्त्र के अन्तिम तन्त्र से संकलित है जिसमें व्यावहारिकता या लौकिकता के अभाव में कोरे (शुष्क) ज्ञान को व्यर्थ बताया गया है। तीन ब्राह्मणपुत्रों ने अपनी विद्या के बल पर मृत सिंह को जीवित कर दिया और उसी के द्वारा वे मार डाले गये। उनमें इसके परिणाम का बोध ही नहीं था।

3. राष्ट्रबोधः– यह एक आधुनिक लघुकथा है जिसमें राष्ट्र के आन्तरिक शत्रुओं को दण्डित करने की कहानी है। ये शत्रु नकली सामान बनाकर बाजारों में उन्हें खपाते हैं। इन सामानों को असली समझकर लोग खरीदते हैं। इन राष्ट्रद्रोहियों की पहचान करके दण्डित कराना वस्तुत: राष्ट्रभक्ति है।

(ग) संवादात्मक पाठ

1. संस्कृतस्य महिमा– कक्षा में छात्रों तथा अध्यापक के बीच संस्कृत भाषा और साहित्य की व्यापकता को लेकर एक संवाद की परिकल्पना इस पाठ में हुई है।

(घ) निबन्धात्मक पाठ

1. चत्वारो वेदाः– इस पाठ में प्राचीन भारतीय संस्कृति के आधारग्रन्थों के रूप में चारों वेदों की संरचना और स्वरूप का परिचय दिया गया है तथा वैदिक साहित्य की व्यापकता निरूपित है।

2. संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणम्– पृथ्वी के ऊपर वर्तमान प्राणियों के जीवन के अनुकूल प्राकृतिक परिस्थितियों का सन्तुलन पर्यावरण है जिसकी चर्चा प्राचीन संस्कृत साहित्य के ग्रन्थों में मिलती है। इस पाठ में उससे सन्दर्भ लिये गये हैं तथा प्राकृतिक उपकरणों को देवरूप में देखने की चर्चा की गयी है। इसी से प्रकृति का सौन्दर्य और प्राणिजगत् का व्यवस्थित जीवन संभव है।

3. बिहारस्य सांस्कृतिकं वैभवम्– संगीत, नृत्य, चित्रकला और मूर्तिकला में बिहार राज्य की स्थिति बहुत आगे रही है। परम्परा-प्राप्त इन सांस्कृतिक क्षेत्रों में आजतक कलाकार और शिल्पी अपना अनुपम योगदान कर रहे हैं। इस पाठ में अपने राज्य की इसी सांस्कृतिक उपलब्धि का संक्षिप्त परिचय दिया गया है।

4. ईद-महोत्सवः– मुसलमान बन्धुओं के सबसे बड़े उत्सव ईद-उल-फित्र के महत्त्व, स्वरूप तथा कतिपय विधानों का वर्णन इस पाठ में किया गया है जिससे संस्कृत की व्यापकता और ग्राह्यता पर प्रकाश पड़ता है।

5. ग्राम्यजीवनम्– सदा से ग्रामजीवन को ईश्वर का वरदान और आनन्द का रूप माना गया है किन्तु आज ग्राम अभिशाप बने हुए हैं। तभी वहाँ से लोग नगरों की ओर भाग रहे हैं। इस पाठ में ग्राम्यजीवन की दशा और सुधार की दिशा का निरूपण किया गया है।

6. वीर कुँवर सिंहः– 1857 ई० के प्रथम स्वाधीनता-संग्राम में अंगरेजों के विरुद्ध क्रान्ति के अग्रणी नेताओं में जगदीशपुर (भोजपुर) के सामन्त बाबू कुँवर सिंह का नाम गर्व से लिया जाता है। इनपर

संस्कृत में महाकाव्य भी लिखा गया है। हिन्दी-अंगरेजी में इनके कई जीवन-चरित मिलते हैं। इस पाठ में इनका संक्षिप्त जीवन वर्णित है।

7. किशोराणां मनोविज्ञानम्– विद्यालयों की उच्च कक्षाओं के छात्र-छात्राओं में भावी जीवन के प्रति अनेक प्रकार के भाव उत्पन्न होते हैं। महत्त्वाकांक्षा भी उनमें अन्यतम है। अपनी भावनाओं को स्वाभाविक रूप से विकसित करके समाजोपयोगी बनाना आवश्यक है। इसी लक्ष्य को लेकर यह पाठ दिया गया है।

अध्यापकों से निवेदन– संस्कृत के प्रति छात्र-छात्राओं में रुचि उत्पन्न करने के लिए कक्षा में विद्यमान बहुभाषिकता को अध्यापक आधार-रूप में प्रयोग करें। यथासाध्य क्षेत्रीय भाषाओं को भी माध्यम बनाते हुए संस्कृत भाषा में दक्षता पाने के लिए छात्रों को उन्मुख करें।

संस्कृत व्याकरण का अध्यापन पाठ्य-पुस्तक में आये हुए प्रयोगों को आधार बनाकर करना समीचीन होगा। इससे छात्रों में कण्ठस्थीकरण की प्रवृत्ति की अपेक्षा सर्जनात्मक क्षमता का विकास होगा। अभ्यास के लिए जो सामग्री दी गयी है उसे आधार बनाकर नये-नये अभ्यास-प्रश्नों का निर्माण करें तो छात्रों की उन्मुखता अधिक हो सकेगी।

पद्यात्मक पाठों का स्वर-सहित उच्चारण सिखायें तो वे पाठ सहज ही हृदयंगम हो जाएँगे। गद्य-पाठों को भी धैर्य-पूर्वक पढ़ना सिखायें। व्याकरण के प्रकरणों को पृथक् न पढ़ाकर पाठक्रम में ही सन्धि, समास, प्रकृति-प्रत्यय-विभाग (व्युत्पत्ति), विभक्ति इत्यादि की चर्चा करते हुए छात्रों को सिखायें। इससे व्याकरण भारस्वरूप नहीं होगा। संक्षेप में कहें कि छात्रों को कुशल बनाना और अपने को अध्यापक के रूप में यशस्वी बनाना शिक्षा के इन दो मूल सूत्रों को न भूलें।

द्रुतवाचन (Rapid Reading)

इस मूल पाठ्य-पुस्तक के अनुपूरक ग्रन्थ के रूप में द्रुतपाठ या द्रुतवाचन के लिए संस्कृत से सम्बद्ध सामग्री दी गयी है। शिक्षा की अभिनव प्रगति के क्रम में भाषा-विषयों के अध्ययन के लिए इस प्रकार की सामग्री की उपयोगिता अंकित की गयी है। यह सामग्री अनेक लक्ष्यों से सम्पन्न है। पहला लक्ष्य तो छात्रों की जिज्ञासा और रुचि के परिष्करण का है। इस नयी पाठ-सामग्री का परीक्षा से सम्बन्ध नहीं है अत: कोई भार की बात छात्रों के मन में नहीं रहेगी तो इसका वाचन वे आनन्दपूर्वक करेंगे। इससे उनकी ज्ञानवृद्धि भी होगी– जो इसका दूसरा लक्ष्य है। कोई सामग्री यदि पढ़ी जाये तो वर्तमान ज्ञान की समृद्धि में वह योगदान करेगी ही।

इसका तीसरा लक्ष्य है छात्रों की चिन्तन-प्रक्रिया और सर्जनात्मकता (Creativity) का विकास करना। जिस प्रकार समाचार-पत्रों तथा अनुपूरक साहित्य की सामान्य पुस्तकों के अनुशीलन से छात्रों की रचना-क्षमता और चिन्तन-शक्ति विकसित होती है उसी प्रकार इस अनुपूरक सामग्री का आस्वादन सामान्य साहित्य के रूप में किया जायेगा तो निश्चित ही छात्रों की बौद्धिक क्षमता का विकास होगा, उनमें कुछ लिखने-पढ़ने की प्रवृत्ति पनपेगी तथा यह जानकारी उन्हें मिलेगी कि संस्कृत में आज किस प्रकार की रचनाएँ हो रही हैं।

द्रुतपाठ के लिए संकलित इस सामग्री में जिन आधुनिक रचनाओं को संकलित किया है उनके रचनाकारों के प्रति हम अत्यधिक कृतज्ञ हैं।

मूल पाठ्यपुस्तक तथा द्रुतवाचन के लिए सामग्री-प्रस्तुति में यथासाध्य परिश्रम किया गया है। विभिन्न प्रतिभागियों के द्वारा जो निर्देशानुसार कार्य सम्पादित किया गया उसे यथासम्भव एकरूप बनाने एवं परिष्कृत करने का प्रयास हुआ है तथापि इसमें जो त्रुटि हुई हो उसके लिए अग्रिम क्षमा माँगने के साथ अनुरोध भी करता हूँ कि अपने सत्परामर्शों से अध्यापक-बन्धु मुझे अवगत करायें जिससे 'तेजस्वि नावधीतमस्तु' का लक्ष्य प्राप्त हो सके।

डॉ0 सुरेन्द्र कुमार

समन्वयक

संस्कृत पाठ्-पुस्तक-विकास-समिति

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार)

उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

अध्यक्ष

संस्कृत पाठ्य-पुस्तक-विकास-समिति

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार)

विषयानुक्रमणिका

		पृष्ठाङ्काः
1.	ईशस्तुतिः (उपनिषद्, भगवद्गीता)	1
2.	लोभाविष्टः चक्रधरः (पञ्चतन्त्रम्)	6
3.	यक्षयुधिष्ठिर-संवादः (महाभारतम्)	17
4.	चत्वारो वेदाः (निबन्धः)	22
5.	संस्कृतस्य महिमा (वार्तालापः)	27
6.	संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणम् (निबन्धः)	34
7.	ज्ञानं भारः क्रियां विना (पञ्चतन्त्रम्)	42
8.	नीतिपद्यानि (नीतिशतकम्)	49
9.	बिहारस्य सांस्कृतिकं वैभवम् (निबन्धः)	57
10.	ईदमहोत्सवः (निबन्धः)	64
11.	ग्राम्यजीवनम् (निबन्धः)	69
12.	वीर कुँवर सिंहः (निबन्धः)	75
13.	किशोराणां मनोविज्ञानम् (निबन्धः)	84
14.	राष्ट्रबोधः (आधुनिकलघुकथा)	95
15.	विश्ववन्दिता वैशाली (गीतम्)	105